मासिक
RNI No. MPHIN/2004/14249

अक्षर वार्ता

मूल्य 100/- रुपये

वर्ष - 19 अंक - 2
(दिसम्बर 2022)
Vol - XIX Issue No - II
(December - 2022)

कला-साहित्य-संस्कृति-समाजविज्ञान-अर्थशास्त्र-वाणिज्य-विज्ञान-प्रौद्योगिकी की अंतरराष्ट्रीय रेफर्ड एवं पियर रिव्यूड शोध पत्रिका

Indexed in International, Impact Factor Services (IIFS) Database and Indexed with IIJIF
Indexed in the International, Institute of Organized Research, (I2OR) Database
Monthly International, Refereed Journal & Peer Reviewed
ISSN 2349 - 7521 , IMPACT FACTOR - 6.375

» aksharwartajournal@gmail.com » www.facebook.com/aksharwartawebpage » +918989547427

AKSHARWARTA IS registered MSME with Ministry of MSME, Government of India
MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021

Scanned with OKEN Scanner

अक्षर वार्ता
अंतरराष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2349-7521, Impact Factor - 6.375
Vol - XIX, Issue - II, December - 2022
MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021
"AKSHARWARTA" Monthly International Refereed Journal

राजेश जोशी का कविता लोक

डॉ. गौरी त्रिपाठी

एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, गुरू घासीदास केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिलासपुर

राजेश जोशी हिंदी कविता की उस परंपरा के कवि है जिनमें एक साथ नई कविता, वामकविता और समकालीनता तीनों को एक साथ देख सकते हैं। इन्होंने हिंदी कविता को नई समवेदनाएं दी हैं जिसमें हम सामान्य से सामान्य संवेदना की कविताएं पढ़ सकते हैं। मुख्यतः ये निम्न मध्य वर्ग के कवि हैं जिसमें रोजमर्रा के जीवन में लगे हुए लोग, बेरोजगार युवाओं की चिंता स्वाभाविक तरीके से दिखती है। जब कभी हम अपने से बतियाते हैं या अपने को देखते हैं। जो कुछ भी महसूस करते हैं कभी किसी कवि की कविताओं में हूबहू भी पा जाते हैं। ऐसे तमाम कवि हैं या यूं कहें कि कविता की दुनिया हमारे मनोभाव की दुनिया होती है। जब हमारे अनुभव की दूरी कविता में एकदम खत्म सी हो जाती है तो मुझे लगता है कि ऐसे कवि हमारे हृदय के बहुत नजदीक हो जाते हैं और राजेश जोशी की कविता को हम संवेदनाओं के इसी पक्ष के लिए रखते हैं। समकालीन कविता के महत्वपूर्ण कवि राजेश जोशी को हम बिल्कुल भी नजरअंदाज नहीं कर सकते हैं या यूं कहें कि समकालीन कविता उनके बगैर मुकम्मल नहीं होती है। आजादी के बाद धूमिल की कविता जिस प्रकार भारतीय जनतंत्र की असफलता पर आक्रोश व्यक्त कर रही थी इसके बाद की पीढ़ी में राजेश जोशी ही ऐसे कवि हैं जो आक्रोश और आत्मीयता को अपनी कविता में एक साथ बरतते हैं। सामाजिक यथार्थ और सपनों की एक साथ आवाजाही है इनकी कविताओं में।

गलत है सरासर यह सोचना कि जो विजयी है वही श्रेष्ठ है
बर्बरों ने ही अक्सर जीता है सभ्यताओं को
उलटी घूम रही हैं घड़ी की सूईयां
सदी का अंत कुछ पिछली सदियों को ढो रहा है
ऐसा होता तो नहीं है पर हो रहा है।

हमारे समय का सच है यह कि जिसे सफलता प्राप्त है जो विजयी है वही बेहतर है लेकिन इसके पीछे का सच क्या होता है इसे राजेश जोशी जब तब हमें बताते रहते हैं। राजेश जोशी प्रतिरोध के कवि हैं। प्रतिरोध के स्वर को अपनी कविताओं में वे धीरे-धीरे प्रस्तुत करते रहते हैं। हर जगह उनकी कविताएं साहित्य कला और माननीय सरोकारों से गहरे अर्थों में जुड़ी हुई हैं वह पिछले लाइन की सबसे कमजोर आवाज को कविता में ले आते हैं। हर वक्त उनकी कविता सत्ता से टकराती दिखाई पड़ती है-

धकेल दिये जाएंगे कला की दुनिया से बाहर, जो चारण नहीं
जो गुन नहीं गायेंगे मारे जाएंगे
धर्म की ध्वजा उठाए तो नहीं जाएंगे जुलूस में
गोलियां भून डालेंगी उन्हें, काफिर करार दिए जाएंगे।

राजेश जोशी की कविता में सबसे ज्यादा चिंता समाज, व्यक्ति और मानवीय मूल्यों के लिए दिखाई पड़ती है। उनकी कविताएं हमारे अंदर सवाल पैदा करती हैं और यह सवाल और पीड़ा जाहिर सी बात है सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था के व्यतिक्रम की वजह से है-

लिखते हैं-

'कविता के लिए यह समय तनाव गहरी निराशा असमंजस और एक तरह से खींच से भरा है चारों ओर घट रही घटनाओं ने हमारे बहुत सारे सपने और विश्वासों को आहत किया है लिखा जा रहा है लेकिन गहरे असंतोष और अपने समय की उस भयावह जिम्मेदारी को पूरी तरह ना निभा पाने की तकलीफ के साथ जो जनता के महान आत्मा को इच्छाओं को आकार देती है।'[3]

राजेश जोशी की कविताओं में प्रतिरोध के स्वर और संघर्ष के तमाम रंग बहुत ही स्वाभाविक तरीके से उभरते हैं ,वे वह बार-बार निकलना चाहते हैं समाज की चल रही यथास्थिति वादी विचारधारा से तथा समकालीन शोषण की परंपरा से। सब पर सवालिया नजर बनाए रखते हैं चाहे वह भ्रष्टाचार हो सांप्रदायिकता हो या फिर चल रहऔर लगभग चार दशकों से वे लगातार कविता हस रहे हैं अपने सपाट बयानी किस्सागोई और अपने विलक्षण भाषा से वे समकालीन कवियों में अपनी अलग पहचान बनाए हुए हैं। वे हर हाल में स्वतंत्रता के पक्षधर हैं-

यूं भी दुनिया में सबसे बड़ी तादाद अधूरी कविताओं की है
पूरी कविताओं में भी कहीं ना कहीं बचा ही रहता है एक अधूरापन
हर मुकम्मल कविता को लिखना चाहता है
दूसरा कवि दूसरी तरह

राजेश जोशी वर्तमान व्यवस्था का प्रतिरोध करने के लिए कविता को ही एक माध्यम बना लेते हैं और अंधेरे का गीत गाते हैं क्योंकि उन्हें लगता है अंधेरे के गीत वही व्यक्ति गा सकता है जो अंधेरे की पूरी व्यवस्था को जानता होगा-

वे अंधेरे समय में अंधेरे के गीत गाते थे।
अंधेरे के लिए यही सबसे बड़ा खतरा था।।

राजेश जोशी की पूरी कविताएं हमें दो रूपों में दिखाई पड़ती हैं एक तो नए युवा कवि राजेश जोशी और दूसरे वरिष्ठ कवि के रूप में। हमें उनकी शुरुआती दौर की कविताएं देखनी चाहिए। यह अंतर हमें कायदे से दिखाई पड़ता है। शुरू में उनकी कविताओं में एक गहरा रोमांच दिखाई पड़ता है जीवन के प्रति समकालीन समय में रूमानियत की जगह गहरी चिंता और बेचैनी ले लेती है। खासतौर पर चांद की वर्तनी संग्रह कविता में बार-बार आधुनिक से उत्तर आधुनिक हो रहे मनुष्यों की चिंता करते हैं जो परिवर्तन और आगे बढ़ने की अंधी दौड़ में अपने मूल्यों को खोता जा रहा है। वह भूल

Scanned with OKEN Scanner